Worksheet - 14 Subject: - Hindi कक्षा - आठ Teacher: - Mrs. Meera

Name: _____ Class & Sec: _____ Roll No. _____ Date: 19.05.2020

अभ्यास

1. **किन्हीं दो राज्यों के नाम लिखिए जिनकी भाषा हिंदी है—**

   क. उत्तर प्रदेश ख. बिहार

2. **गुरुमुखी और रोमन लिपियों में लिखी जानेवाली एक-एक भाषा का नाम लिखिए—**

   क. पंजाबी ख. अंग्रेजी

3. **वैदिक भाषा से हिंदी तक की यात्रा में मुख्य पड़ाव कौन-कौन-से हैं?**

   उ. संस्कृत → प्राकृत → आधुनिक हिंदी

4. **राजस्थानी हिंदी की दो बोलियों के नाम लिखिए—**

   क. जयपुरी ख. मेवाती

5. **दक्षिण भारत में प्रयुक्त होनेवाली किन्हीं दो भाषाओं के नाम लिखिए—**

   क. तेलुगु ख. तमिल

6. **व्याकरण का भाषा के साथ क्या संबंध है?** *(M.I.)*

   उ. व्याकरण भाषा के वर्णों, शब्दों और वाक्यों का शुद्ध ज्ञान एवं प्रयोग सिखाता है तथा भाषा के मानक रूप का निर्धारण करता है।

7. **पश्चिमी हिंदी की किन्हीं दो बोलियों के नाम लिखिए—**

   क. हरियाणवी ख. ब्रज

8. **देवनागरी लिपि का विकास किस प्राचीन लिपि से हुआ?**

   उ. देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ।

9. **तुलसीदास द्वारा रचित विख्यात महाकाव्य का नाम बताते हुए उसकी भाषा भी लिखिए—**

   उ. तुलसीदास द्वारा रचित विख्यात महाकाव्य का नाम रामचरितमानस है तथा उसकी भाषा अवधी है।

10. **भारतीय आर्य परिवार की सबसे प्राचीन भाषा का नाम लिखिए—**

    उ. भारतीय आर्य परिवार की सबसे प्राचीन भाषा—संस्कृत है।

वर्ण-विवेक

2 वर्ण-विचार Phonology/Orthography

वर्ण या अक्षर Alphabet

प्रत्येक भाषा के अपने स्वरूप को प्रकट करनेवाले अलग-अलग कुछ अक्षर अथवा चिह्न होते हैं जिन्हें 'वर्ण' कहा जाता है।

शब्द का सबसे छोटा खंड, जिसके और खंड न हो सकें, उसे वर्ण कहते हैं।

अक्षर—वर्ण को सूक्ष्म भेद के साथ 'अक्षर' भी कहते हैं। जिसका क्षर कभी नहीं होता, अ + क्षर यानी जो कभी नष्ट न हो, अर्थात अक्षर का अभिप्राय होता है, वे अक्षर जिनकी ध्वनि नष्ट नहीं होती, सदैव रहती है। अतः छोटी-से-छोटी ध्वनि जो खंडित न हो सके उसे 'अक्षर' कहा जाता है। वर्ण ध्वनि के लिखित रूप के लिए प्रयोग में लाया जाता है; जैसे— अ, आ, क, ख, ग आदि। कुछ विद्वान दोनों को एक ही मानते हैं।

वर्ण के भेद : वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। वर्णों को दो रूपों में बाँटा गया है— स्वर और व्यंजन। हिंदी वर्णमाला इस प्रकार है—

क. स्वर : अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ = 11 (अं अः) = 13

ख. व्यंजन :

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	(ड़्, ढ़्)
त्	थ्	द्	ध्	न्	
प्	फ्	ब्	भ्	म्	
य्	र्	ल्	व्		
श्	ष्	स्	ह्		11+2+33+2 = 48

संयुक्ताक्षर : क्ष त्र ज्ञ श्र 48+4 = 52

ग. अयोगवाह : 'अं' और 'अः' अयोगवाह हैं। 'अं' को अनुस्वार और **अः** को विसर्ग कहा गया। इन दोनों का प्रयोग स्वरों के बाद किया जाता है; जैसे— प्रायः, प्रातः, अतः आदि। अयोगवाह के उच्चारण से पूर्व स्वर आता है। स्वर और व्यंजन के मध्य की स्थिति होने के कारण इन्हें वर्णमाला में स्वरों के बाद रखते हैं। 'अं' का प्रयोग स्पर्श व्यंजनों के पंचम वर्णों (ङ, ञ, ण, न, म) के लिए किया जाता है।

16:36

व्यंजन Consonant

जिन वर्णों के उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता ली जाती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यंजनों का उच्चारण बिना स्वर के नहीं किया जा सकता। इनकी संख्या मूल रूप में 33 (तैंतीस) है लेकिन कुछ विद्वान इनकी संख्या 35 मानते हैं। इसका विवेचन आगे किया गया है। इन 33 व्यंजनों को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया गया है— **स्पर्श, अंतस्थ और ऊष्म**।

क. स्पर्श व्यंजन *(Mutes)* : जिन अक्षरों अथवा वर्णों के उच्चारण के समय जिह्वा मुख के विभिन्न भागों; जैसे— ओष्ठ, दंत, तालु, जिह्वा और मूर्धा तथा इनके मेल से कंठतालु, कंठोष्ठ आदि का स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन की संज्ञा दी जाती है। स्पर्श व्यंजन 27 हैं। प्रत्येक वर्ग का नाम उस वर्ग के पहले व्यंजन के नाम पर रखा गया है; जैसे—

कवर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	
चवर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	
टवर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	(ड़्, ढ़्)
तवर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्	
पवर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्	

ध्यान दें—

व्यंजन 33 हैं या 35 : व्यंजन पहले 33 माने जाते थे परंतु टवर्ग के अंतर्गत ड़ और ढ़ के प्रचलन के कारण अब व्यंजनों की संख्या पैंतीस हो गई है। हिंदी में ड और ड़ तथा ढ और ढ़ अलग-अलग व्यंजन हैं। उदाहरण के लिए '**लड़ना**' और '**डकारना**', इन दोनों के उच्चारण में बहुत अंतर है। इसी प्रकार '**बूढ़ा**' और '**ढक्कन**', इन दोनों के उच्चारण में अंतर है। 'ड़' और 'ढ़' व्यंजन हिंदी में स्वत: ही प्रयुक्त होने लगे, ये संस्कृत में नहीं थे। फिर इनके ध्वनि-चिह्न निश्चित कर दिए गए। ये दोनों ध्वनियाँ हिंदी की अपनी विकसित ध्वनियाँ हैं।

ख. अंतस्थ व्यंजन *(Semi-Vowels)* : इसका शाब्दिक अर्थ है— अंत: अर्थात बीच में 'स्थ' स्थित होना अर्थात जो अक्षर व्यंजनों और स्वरों के बीच में स्थित रहते हैं, उन्हें अंतस्थ कहते हैं। यहाँ बीच में स्थित होने का अभिप्राय उनके उच्चारण से है। जिन वर्णों का उच्चारण न तो पूर्ण रूप से व्यंजनों का होता है और न ही स्वरों का, उन्हें अंतस्थ कहा जाता है। अंतस्थ वर्णों की संख्या चार है— **य, र, ल, व्**।

ग. ऊष्म व्यंजन *(Sibilant)* : इसका शाब्दिक अर्थ है 'गरम'। जिन वर्णों के उच्चारण में मुँह से गरम हवा बाहर निकले और हलकी सीटी की-सी आवाज आए, उन वर्णों को ऊष्म वर्ण कहा जाता है। इनकी संख्या भी चार ही है— **श, ष, स, ह**।

कुछ विशेष बातें—

क. **संयुक्त अक्षर** : जब दो अथवा दो से अधिक व्यंजन आपस में मिल जाते हैं तो उन्हें संयुक्त अक्षर कहा जाता है। देवनागरी लिपि में जब दो व्यंजन आपस में मिल जाते हैं तो इनका रूप बदल जाता है और इनको लिखा भी अलग प्रकार से जाता है। इस प्रकार के संयुक्ताक्षरों की संख्या चार है— क्ष, त्र, ज्ञ, श्र। ये निम्न प्रकार से बनते हैं—

क् + ष = क्ष = अक्षर
ज् + ञ = ज्ञ = ज्ञान
त् + र = त्र = नक्षत्र
श् + र = श्र = श्रवण

ख. **संयुक्त व्यंजन** : जब कोई स्वर रहित व्यंजन स्वरसहित व्यंजन से मिलकर नया अक्षर बनाता है और व्यंजनों की मूल आकृति स्पष्ट नजर आती है तो उसे संयुक्त व्यंजन कहा जाता है; जैसे— त्याग, बल्ब, सप्ताह आदि। संयुक्त व्यंजनों में दो से अधिक व्यंजनों का संयोग भी हो सकता है; जैसे— स्वास्थ्य।

ग. **व्यंजन द्वित्व** : जब समान (पहला स्वररहित, दूसरा स्वरसहित) व्यंजन संयुक्त होते हैं तब वे व्यंजन द्वित्व कहलाते हैं; जैसे— बच्चा, मिट्टी, खट्टा, नब्बे आदि।

घ. **अनुस्वार** : 'अनु + स्वर' अर्थात स्वर के पीछे-पीछे चलने के कारण इन्हें अनुस्वार कहते हैं। यह नासिक्य ध्वनि है जो वर्ण के ऊपर ं लगाकर प्रकट की जाती है। मानक वर्तनी में पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) का प्रयोग अनुस्वार के रूप में किया जाता है। यदि यह कवर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए तो 'ङ'; जैसे— शंङ्ख = शंख; चवर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए तो 'ञ'; जैसे— मञ्जन = मंजन; टवर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए तो, 'ण्'; जैसे— डण्डा = डंडा; तवर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए तो न्; जैसे— पन्त = पंत तथा पवर्ग वर्ग के किसी व्यंजन से पहले आए तो म्; जैसे— प्रारम्भ = प्रारंभ।

ङ. **अनुनासिक** : इसका प्रयोग हिंदी में किया जाता है। जिन स्वरों के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नासिका की भी सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें अनुनासिक कहते हैं। अनुनासिक स्वर का चिह्न चंद्रबिंदु (ँ) है।

वर्ण-विच्छेद

वर्ण भाषा की लघुतम अर्थात सबसे छोटी इकाई है। वर्ण के और टुकड़े या खंड नहीं किए जा सकते; जैसे—क्, ख् आदि। वर्ण-विच्छेद का तात्पर्य किसी शब्द में आए वर्णों और ध्वनियों को अलग-अलग करके जानना है। दूसरे शब्दों में यह जानना कि शब्द की संरचना कैसे हुई है; जैसे—'धर्म' शब्द में तीन ध्वनियाँ और तीन ही आकृतियाँ अथवा वर्ण दिखाई दे रहे हैं परंतु प्रत्येक वर्ण के साथ अन्य ध्वनियाँ भी हैं; जैसे— ध् + अ + र् + म् + अ

- विद्या — व् + इ + द् + य् + आ
- ऋषि — ऋ + ष् + इ
- उन्नति — उ + न् + न् + अ + त् + इ

वर्ण-विच्छेद के कुछ नियम इस प्रकार हैं—

1. संयुक्त व्यंजन—

- क्ष → परीक्षा — प् + अ + र् + ई + क् + ष् + आ
- त्र → पवित्र — प् + अ + व् + इ + त् + र् + अ
- ज्ञ → विज्ञान — व् + इ + ज् + ञ् + आ + न् + अ
- श्र → विश्राम — व् + इ + श् + र् + आ + म् + अ

16:36